एंजेल, पूर्व-ईसाई, अमेरिका

रेटिंग:

विवरण:

श्रेणी: लेख नए मुसलमानों की कहानियां महिलाएं

द्वारा: Angel (Edited by IslamReligion.com)

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

इस्लाम में शामिल होने के बारे में हर मुसलमान की एक कहानी है। हर एक मेरे लिए दिलचस्प और जिज्ञासा भरा है। ईश्वर जिसे चाहता है, वास्तव में मार्गदर्शन करता है और केवल उसका ही मार्गदर्शन करता है जिसे वह चाहता है। मैं चुने हुए लोगों में से एक होने के लिए बहुत धन्य महसूस करती हूं। ये रही मेरी कहानी।

मैं हमेशा एक ईश्वर में विश्वास करती थी। अपने पूरे जीवन में कठिनाई के दौरान, और एक बच्चे के रूप में भी मैंने ईश्वर से मदद मांगी। मुझे याद है कि मैं रसोई में घुटनों के बल रोती थी, मेरे चारों ओर चीखना-चिल्लाना होता था। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती थी कि वह इसे बंद कर दे। ओर धर्म का कभी कोई मतलब नहीं था। मैं जितनी बड़ी होती गयी, यह वास्तव में मेरे लिए उतना ही कम मायने रखने लगा था। लोग सोचते थे कि वे आपके और ईश्वर के बीच मध्यस्थ थे।

मैंने ईसा के बारे में भी ऐसा ही महसूस किया, [उन पर ईश्वर की दया और आशीर्वाद हो]। यह कैसे हो सकता है कि यह आदमी हम सभी को हमारे पापों से बचा लेगा? हमें सिर्फ उसके कारण पाप करने का अधिकार क्यों है? मैंने बाइबल को इसके सभी संस्करणों में अस्वीकार कर दिया, यह विश्वास करते हुए कि कई बार अनुवादित और फिर से लिखी गई कोई चीज़ ईश्वर के वास्तविक वचन नहीं हो सकते। पंद्रह साल की उम्र में मैंने ईश्वर को पाने का विचार छोड़ दिया था।

बड़ी हुई तो देखा कि मेरा परिवार औसत अमेरिकी परिवार था। जिन जिनको मैं जानती थी, सभी को बड़ा होते समय समान समस्याएं थीं। मेरे पिताजी एक मेहनती ब्लू कॉलर शराबी थे। जैसे-जैसे समय बीतता गया, उनकी हालत बिगड़ती गई और उनकी विकृति और आदत भी। यौन शोषण, शारीरिक शोषण और भय ने मेरे बचपन पर एक ऐसी छाप छोड़ी जो मेरे पूरे जीवन को प्रभावित करेगी। जब मैं छठी कक्षा में थी, तब उनका देहांत हो गया। तब तक मेरे माता-पिता का तलाक हो चुका था। मैं आठ बच्चों में सबसे

छोटी थी। मेरी माँ हमारे पालनपोषण के लिए काम पर जाती थी और मैं घर पर बहुत अकेली थी।

यहाँ मैं उन बच्चों में से एक थी, जो समाज से बाहर होते हैं, जो लोगों को डराते हैं जब वे कमरे में आते हैं। मैंने काले कपड़े पहनना और गहरे रंग का मेकअप करना शुरू कर दिया। मैंने गॉथिक संगीत सुना और मौत की कल्पना की। मौत मुझे डर कम और इस बढ़ती हुई समस्या का समाधान ज्यादा लगती थी। मैं हर समय अकेला महसूस करती थी, दोस्तों के आसपास भी। मैंने सिगरेट, फिर शराब, यौन, ड्रग्स से और फिर हर उस चीज़ से, जो मुझे अपने विचारों से दूर ले जाए, इस रिक्तता और खालीपन को भरने की कोशिश की। मैंने कम से कम पंद्रह बार खुद को मारने की कोशिश की। मैंने कितनी भी कोशिश की मेरे अंदर का यह दर्द कभी कम नहीं हुआ।

मैं कॉलेज में थी जब मैं गर्भवती हुई। मुझे अपने बेटे के स्वास्थ्य के बारे में डर था और मैं उसे खोना नही चाहती थी। मैंने अपने बेटे की परवरिश के लिए निरंतर परिश्रम किया। सारे दर्द और गुस्से को अपने दिल में निचोड़ कर मैंने अपनी ज़िंदगी कुछ बदली। तब तक मुझे किसी पर भरोसा नहीं था। तीन साल बाद, मैंने फिर से डेट करना शुरू किया। मेरी सगाई हो गई। मैं वास्तव में कुछ और पाना चाहती थी। मेरे पिछले सभी अनुभवों की तरह, मेरी दुनिया उजड़ गई। मैं 25 साल की थी और फिर से गर्भवती थी और मेरे मंगेतर के बार-बार धोखा देने और मुझे शारीरिक रूप से चोट पहुंचाने के बाद मेरे मंगेतर के साथ मैंने संबंध समाप्त कर दिया। मुझे नहीं पता था कि आगे क्या होगा।

इस दौरान मैं एक पाकिस्तानी व्यक्ति के लिए काम कर रही थी, जो मुस्लिम था। मैंने कभी समाचार नहीं देखा या वास्तव में परवाह भी नहीं की कि क्या हो रहा है। मेरे लिए मुस्लिम होना किसी और धर्म से अलग नहीं था। जैसे-जैसे समय बीतता गया, मेरी कई मुस्लिम मर्दों से दोस्ती हो गई। मैंने नाटकीय रूप से कुछ अलग नोटिस करना शुरू किया। उनके पास ये निर्विवाद रस्म-रिवाज थी। एक तरह से ईश्वर की पूजा, जिसके लिए उन्हें दिन में पांच बार प्रार्थना करने की आवश्यकता होती है। इस तथ्य की तो बात ही छोड़ दीजिए कि वे न तो शराब पीते थे और न ही ड्रग्स लेते थे। मेरी पीढ़ी के लिए यह पुराने स्कूल की नैतिकता थी, हो सकता है कि आपके दादा-दादी ने उनका पालन किया हो।

जब मेरी बेटी का जन्म हुआ, तो आप मेरे आश्चर्य की कल्पना नहीं कर सकते, जब उनमे से एक व्यक्ति उपहार लेकर आया। मैं आश्चर्यचकित थी। उसने उसे उठा लिया और उससे बात की। मैंने कभी पुरुषों को एक बच्चे के साथ इस तरह व्यवहार करते नहीं देखा था। यह दयालुता अगले चार महीनों में लगातार समय के साथ बढ़ती ही गई। जो प्यार हमारे साथ दिखाया गया, मैं उसका इजहार नहीं कर सकती। धीरे-धीरे मेरी दिलचस्पी उनके धर्म के प्रति बढ़ती गई। मैं उत्सुक थी कि किसी प्रकार का धर्म लोगों में इस प्रकार के मूल्यों को स्थापित कर सकता है।

मैं सात लोगों के साथ एक घर में साझा तौर पर रह रही थी। एक रात मैंने अपने कमरे में रहने वाले एक व्यक्ति का कंप्यूटर मांगने का फैसला किया। मैं अपने दोस्तों से सवाल पूछकर उन्हें नाराज करने से बहुत डरती थी, इसलिए मैंने इंटरनेट का रुख किया। मैंने जो पहली साइट खोली वह थी http://www.islam-brief-guide.org. मैं हैरत से गूंगी बनी हुई थी। यह ऐसा था जैसे मेरे शरीर से एक काला कपड़ा उठा लिया गया था, और मैं आपसे क़सम खा कर बताती हूं कि मैंने कभी खुद को ईश्वर के इतना करीब महसूस नहीं किया था। चौबीस घंटे के भीतर, मैंने शाहदह पढ़ लिया।

आज तक मेरा अधिकांश समय शोध में व्यतीत हुआ है। मेरे जीवन में पहली बार किसी ने क्रोध और दर्द को रोका था। मैंने वास्तव में ईश्वर के प्रेम और भय को महसूस किया। ईश्वर ने मेरे अंदर के दर्द को अपने प्रकाश और उस पर विश्वास से बदल दिया था। मेरे धर्म परिवर्तन के बाद से, ईश्वर ने वास्तव में मुझे आशीर्वाद दिया है। ईश्वर ने मुझे लगभग दो वर्षों में धूम्रपान, शराब और नशीली दवाओं का सेवन नहीं करने की शक्ति दी है। मैंने एक बेहतरीन मुस्लिम व्यक्ति से शादी की है। उसने मेरे बच्चों को अपना लिया है और उन्हें अपना बना लिया है। अब मेरे पास वह सब कुछ है जो मैं हमेशा चाहती थी - यानी एक परिवार, [सभी प्रशंसाएं ईश्वर के लिए हैं]।

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/index.php/hi/articles/53

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।